Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

फतेहपुर सीकरी: एक परिचय

अंकुर वर्मा
मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश

Article Info
Volume 4 Issue 1
Page Number: 117-122

Publication Issue :
January-February-2021

Article History
Accepted : 02 Feb 2021
Published :15 Feb 2021

फतेहपुर सीकरी भारतीय इतिहास का ऐसा अद्वितीय शहर माना जाता है जो एक ओर तो बहुत ही कम अवधि में समृद्धि और वैभव के मामले में दुनिया के शीर्ष शहरों में जा पहुँचाए वहीं दूसरे छोर पर उतनी ही तेज़ी से वापस वीरान और परित्यक्त स्थिति में भी आ गया। एक गाँवए एक राजधानी एक सांस्कृतिक समागम केंद्र या फिर विशाल इमारतों वाला एक खाली शहर आखिर फतेहपुर सीकरी को किस दृष्टि से देखा जाये शेख सलीम चिश्ती की खानकाह वाला यह लाल बलुए पत्थर की खदानों वाला स्थान बादशाह अकबर की राजधानी के रूप में विकसित किया जाना उस वक्त शुरू किया गया शेख के आशीर्वाद से उसके पुत्र सलीम का जन्म हुआ।

सीकरी गाँव का उल्लेख बाबर ने अपनी आत्मकथा में किया है। सीकरी से कुछ ही कुछ दूरी पर प्रसिद्ध खानवा का क्षेत्र है जहाँ 1527 ईण में बाबर और राणा सांगा की सेनाओं के बीच भीषण युद्ध हुआ था जिसने भारत में मुग़ल साम्राज्य के भविष्य को काफी हद तक तय कर दिया था। बाबर ने विजयोपरांत इस स्थान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए इस स्थान को शुक्री[1] कहा जो कि बाद में सीकरी हो गया। बाबर ने यहाँ एक उद्यान श्बाग.ए.फतेहश का निर्माण करवायाए साथ एक विशाल हमाम और सीकरी झील के मध्य में एक अष्टकोणीय मंच भी निर्मित करवाया।

सीकरी को अकबर के समय महत्ता प्राप्त हुई यह तथ्य सर्वविदित हैए किन्तु उसके पहले भी यहाँ कुछ इमारतें मौजूद थीं जिनमें से सर्वप्रमुख थी श्संगतराशों की मस्ज़िदश[2] जिसका निर्माण लाल बलुआ पत्थर का इस्तेमाल करते हुए संगतराशों द्वारा बनाया गया था। इसका उपयोग शेखए सँगतराशोंए मजदूरों एवं अन्य लोगों द्वारा इबादत के लिये किया जाता था।

अकबर के युग में फतेहपुर सीकरी को विकसित करने का काम किया गया जिसके पीछे शेख़ के सम्राट पर प्रभाव एवं सलीम के जन्म के अलावा सीकरी की भौगोलिक अवस्थिति भी महत्वपूर्ण थी। अकबर एक साम्राज्यवादी शासक था जो निरन्तर अपना राज्य क्षेत्र विस्तृत करने में यकीन रखता था। ऐसे में राजपुताने पर नियंत्रण रखना भी आवश्यक था। इसी नीति के अंतर्गत वह सुलहकुल अथवा युद्ध के जरिये राजपूतों को अपने अधीन करने में लगा हुआ था। इस दृष्टिकोण से सीकरी की स्थिति अधिक समीप और रणनीतिक रूप से बेहतर पड़ती थी जहाँ से राजपुताने की गतिविधियों पर बेहतर नज़र रखी जा सकती थी। इसके अलावा सबसे महत्वपूर्ण वजह अकबर की खुद की सोच तथा स्थापत्य के प्रति उसके प्रेम को माना जा सकता है जिसने उसे एक नईए भव्य एवं योजनाबद्ध शहरी योजना के निर्माण हेतु प्रेरित किया होगा जो

[1] खण्डहर बोलते हैंए गुणाकर मुलेए पृण67 ।
[2] द मुग़ल आर्किटेक्चर ऑफ फतेहपुर सीकरीए ईण्डब्ल्यूण स्मिथए पृण25 ।

Copyright : © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

उसके व्यक्तित्व को परिलक्षित कर सकें। जहाँगीर अपनी आत्मकथा में लिखता हैए ष्आरम्भ में यह स्थान जंगली जानवरों से भरा रहता था किंतु चौदह पन्द्रह वर्षों के अंदर ही यहाँ अनेक बागए इमारतें एवं सुंदर आनन्ददायक महल निर्मित कर दिये गये।ष[3] बादशाह ने शेख की ख़ानक़ाह के पास पहाड़ी के ऊपर ऊंचे भवनों का निर्माण करवाया। इमारतों का काम पूर्ण होने में लगभग दस वर्ष लग गये। यहाँ बाज़ारए हमामए विशाल द्वारए मस्ज़िद समेत अनेक प्रशासनिक एवं निवास योग्य भवनों की एक श्रृंखला निर्मित की गयी तथा इसे फतेहाबाद नाम दिया गया जिसे गुजरात विजय के उपरांत फतेहपुर कर दिया गया।[4] शहर जो दो मील लम्बा एवं एक मील चौड़ा थाए उसे किलेबंद बुर्ज वाली दीवारों से घेरा गया था।[5] इन दीवारों में अलग.अलग दिशाओं में खुलने वाले कुल नौ दरवाजे बनाये गए थे जो कि अजमेरी दरवाजाए चोर दरवाजाए ग्वालियर दरवाजाए चंदनपुल दरवाजाए तेहरा दरवाजाए बीरबल दरवाजाए लाल दरवाजाए दिल्ली दरवाजा तथा आगरा दरवाजा थे।

फतेहपुर सीकरी के बारे लिखते हुए अबुल फ़ज़ल बताता है कि ष्फतेहपुर एक गाँव था जो आगरा से बारह मील की दूरी पर स्थित था। बादशाह के गद्दी पर बैठने के बाद यह प्रशासनिक प्राथमिकता वाला नगर बन गया। यहाँ एक किला बनाया गया जिसके द्वार पर पत्थर के दो हाथी निर्मित किये गये। शाही महल और कुलीन निवास पहाड़ी की ऊंचाई पर बनाये गए और मैदानी भाग में बाग़ व हवेलियाँ निर्मित की गयीं। सम्राट की आज्ञा से एक मस्ज़िदए एक मदरसा और एक धार्मिक भवन पहाड़ी पर बनाया गया। पास में एक झीलए जिसकी परिधि बारह कोस होगीए के निकट चौगान खेलने का एक मैदान बनाया गया जिसमें कभी.कभी हाथियों का दंगल भी आयोजित किया जाता है। बगल में ही लाल पत्थर की एक खदान है जिससे किसी भी आकर के शिलाखण्डों की खुदाई की जा सकती है।ष

सीकरी की इमारतों को मुखयतः दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता हैए पहली वे इमारतें हो किला प्रांगण के भीतर थीं तथा दूसरी वे जो इसके बाहर निर्मित की गयी थीं। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैरू

● **नौबतखानारू** शाही महल की ओर खुलने वाली यह इमारत आगरा गेट के पास स्थित है। इसे चहार शुंग के नाम से भी जाना जाता था जिसका अर्थ बाजार होता है। इसकी अवस्थिति दीवाने आम के निकट थी। यहां पत्थर की एक बेंच लगाई गई थी जहां बैठकर संगीतकार गायन और वादन का कार्य करते थे। बादशाह के और आने और जाने की मुनादी भी यहीं से की जाती थी।[6] इस इमारत का निर्माण लाल बलुआ पत्थर से किया गया था।[7]

● **दीवान ए आमरू** यह सार्वजनिक सभा भवन था जहां पादशाह जनता की शिकायतों को सुना करता था। इसे समकालीन स्रोतों में दरबार.ए.पादशाहीए दौलत खानाए दीवान खाना जैसे नाम भी दिये गए हैं। यह लाल बलुआ पत्थर की बनी हुई इमारत है। यह एक आयताकार इमारत है जिसके मध्य में एक खुला हुआ प्रांगण बनाया गया था। इस प्रांगण में

[3] फतेहपुर सीकरीरू ए सोर्सबुकए संपाण माइकल ब्रांड एवं ग्लेन डी लॉरीए पृण्31 ।

[4] उपरोक्तए पृण्31 ।

[5] इंडियन आर्किटेक्चरए पर्सी ब्राउनए पृण्94 ।

[6] ए गाइड टू फतेहपुर सीकरीए मोण अशरफ हुसैनए संपाण एच एल श्रीवास्तवए पृण्12 ।

[7] फतेहपुर सीकरीए रिज़वी एवं विन्सेंट जॉन एडम्स फ्लिनए पृण 18.19 ।

चारों तरफ से छत को खंभों पर टिकाया गया है। इन खंभों के आधारों को फूल पत्तियों की आकृतियों से सुसज्जित किया गया था। इसकी छत सीधी समतल है जो कि बल्ली एवं शहतीर शैली पर आधारित निर्मित की गयी थी।

सभा भवन के सामने बादशाह के बैठने का स्थान था जो लाल बलुआ पत्थर के अलंकृत स्तंभों से सजाया गया था। इस इमारत में कई शैलियों का प्रभाव दिखाई पड़ता है। सजावट में लगी जालियों में गुजराती शैली तो छायादार छज्जों में स्थानीय प्रभाव दिखता है। बादशाह के बैठने के स्थान के ऊपर की छत तिरछी ढलवाँ आकृति में बनी है जो बंगाली शैली से प्रभावित थी।

● **दीवान.ए.ख़ासरू** दीवान.ए.आम के दक्षिण पश्चिम में स्थित यह इमारत एक प्रशासनिक भवन थी। बाहर से देखने पर यह दो मंजिला दिखाई पड़ती थी लेकिन वास्तव में इसका निर्माण एक मंजिल में ही किया गया था।[8] इस भवन के मध्य में एक बेहद सुंदर सम्भ निर्मित किया गया था जिस पर फूल पत्तियों एवं ज्यामितीय आकृतियों की घनी नक्काशी की गई थी। यह स्तंभ नींव के पास वर्गाकार तथा मध्य भाग में अष्टकोणीय हो जाता है जो कि ऊपर की ओर सोलह पक्षीय आकर का दिखने लगता था। इस सोलह पक्षीय आकृति को 36 कोष्ठकों द्वारा बेहद खूबसूरती के साथ एक वृत्ताकार आकृति में सजाया गया था। इसके ठीक ऊपर से कक्ष के चारों कोनों पर छज्जों से एक पुल बनाया गया था जो इस भबन के दुमंजिला होने का भ्रम उत्पन्न करता था। इस इमारत की खासियत इसकी शीतलता बनाये रखने की तकनीक थी जिसके लिये इसे दोहरी दीवारों से बनाया गया था जिनके बीच ग्रीष्म ऋतु में जल प्रवाहित किया जाता था जो तापमान को बढ़ने से रोक कर रखता था। इसमें चारों किनारों पर छतरियों का निर्माण किया गया था। इमारत पर गुजरातए माण्डूए राजस्थान की स्थापत्य शैलियों का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है।[9]

● **पंचमहलरू** यह सीकरी की एक प्रमुख इमारत है जिसको पाँच मंजिलों में बने होने के कारण ही पंचमहल कहा जाता है। इसकी खासियत यह है कि प्रत्येक ऊपर वाली मंजिल अपनी निचली मंजिल से आकार में छोटी होती जाती है जहाँ पहली छत 84 खंभों परए दूसरी छत 56 खंभों परए तीसरी छत 20 खंभों परए चौथी छत 12 खंभों पर तथा अंतिम छत केवल 4 खंभों पर टिकी हुई है। सभी स्तम्भ विभिन्न प्रकार की नक्काशियों से सुसज्जित किये गये हैं। इमारत में दक्षिणी. पश्चिमी कोने से एक सीढ़ी ऊपरी मंजिल की ओर जाती है। कई इतिहासकार जहाँ इस भवन को बौद्ध शैली से प्रभावित मानते हैं वहीं एबा कोच जैसे विद्वानों के अनुसार इतना पीछे जाने की जगह समकालीन चंदेरीए ग्वालियरए बयाना व कन्नौज के इलाकों में धर्मनिरपेक्ष वास्तु के उत्तम नमूने देखे जा सकते हैं।[10] मोहम्मद अशरफ हुसैन भी इसके समर्थन में बताते हैं कि अकबर के युग में चार या पाँच मंजिला बौद्ध विहार मौजूद नहीं थे।[11] इस इमारत को देखकर कहा जा सकता है कि जिस तरह अकबर अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए क्षेत्रीय शक्तियों को स्वयं में समायोजित कर रहा था वैसा ही प्रयोग उसने स्थापत्य में भी किया।

[8] ए गाइड टू फतेहपुर सीकरीए मोण अशरफ हुसैनए संपाण एच एल श्रीवास्तवए पृण15 ।

[9] आर्किटेक्चर ऑफ मुग़ल इंडियाए कैथरीन बी अशरए पृण63 ।

[10] मुग़ल आर्किटेक्चरए एबा कोचए पृण74 ।

[11] ए गाइड टू फतेहपुर सीकरीए मोण अशरफ हुसैनए संपाण एच एल श्रीवास्तवए पृण30 ।

इस इमारत के चारों ओर जालियों का निर्माण कराया गया था जिन्हें अंग्रेजों द्वारा तुड़वा दिया गया।[12] ई बी हैवेल ने पंचमहल को हिन्दूए बौद्ध एवं सरसानिक शैली का सुन्दर मिश्रण कहा है।[13]

● **जामा मस्जिदरू** सीकरी में बनी इमारतों में यह सबसे बड़ी और शानदार है। इसको मक्का की प्रसिद्ध मस्ज़िद को ध्यान में रखकर बनाया गया था। इसके पूर्व और उत्तर में दो द्वार थे। पूर्वी द्वार जिससे बादशाह प्रवेश करता थाए श्बादशाही दरवाजाश कहलाता था[14] जबकि दक्षिणी द्वार को श्बुलंद दरवाजाश कहा जाता था। इमारत 515 फीट लम्बी व 432 फीट चौड़ी है।[15] इसकी मुख्य मेहराब पीछे के गुम्बद से बड़ी है जो कि तुगलक स्थापत्य की विशेषता मानी जाती है। खम्भोंए छतों व कोष्ठकों की बनावट में हिन्दू स्थापत्य की छाप दिखती है। आंगन की तरफ बने गलियारे के स्तंभों पर छोटी छतरियों का प्रयोग दिखाई पड़ता है। सीकरी मस्ज़िद में लगे स्तम्भ खंभात की जामा मस्जिद एवं गुजरात में अहमदशाह की मस्जिद के समान प्रतीत होते हैं और अहमदशाह की मस्जिद खुद हिन्दू मंदिर स्थापत्य से प्रभावित थी।[16] सीकरी की जामा मस्जिद मुगलकालीन पहली मस्जिद थी जिसके आंगन के नीचे जल संरक्षण के लिए टैंक बनाया गया था। पर्सी ब्राउन के अनुसारए ष्इस सुंदर भवन में जैसी रचनागत विविधता है उसकी किसी अन्य भवन से तुलना नहीं की जा सकती है। ऐसा प्रतीत होता है मानो कलाकारों ने किसी अति सुंदर हस्तलिखित ग्रंथ के पृष्ठों को अपना आदर्श माना हो और ज्यामितीय आकृतियों एवं रंगों की सहायता से उसे पत्थरों पर उतार दिया हो।ष[17]

● **बुलन्द दरवाज़ारू** यह दरवाजा अकबर के व्यक्तित्व की सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति माना जा सकता है जो कि अपनी उपस्थिति के जरिये बादशाह की भव्यताए विशालता एवं दार्शनिकता का आभास करवाता है। यहाँ बाइबिल की कुछ पंक्तियाँ उद्धृत हैं जो कहती हैं कि ष्संसार एक पुल है इससे गुजर जाओ पर इस पर बस नहीं सकते।ष[18] ये अकबर की दार्शनिक सोच और उसके सहिष्णुतापूर्ण सार्वभौमिक नज़रिये को भी प्रकट करती हैं। इस द्वार का निर्माण अकबर की गुजरात विजय के उपलक्ष्य में करवाया गया था। यह ईरान की अर्द्ध गुम्बदीय शैली से प्रभावित दिखता हैं। इसकी दीवारों पर कुरान की आयतों का लेखन अहमद अल चिश्ती के निर्देशन में किया गया था।[18] इस दरवाजे की ऊंचाई 176 फीट है जिसमें 42 फीट चबूतरे जबकि 134 फीट दरवाजे की ऊंचाई है। यह मात्र एक द्वार नहीं अपितु एक संपूर्ण भवन था जिसमें कई कक्ष भी बनाए गए थे। इसका मध्य का भाग ऊंचा है तथा दोनों किनारों को कम ऊंचा बनाया गया है। यह एक तीन मंजिला इमारत है जिसकी प्रत्येक मंजिल पर सुंदर खिड़कियां बनायी गयी थीं। ऊपर छोटी.छोटी छतरियों एक की श्रंखला निर्मित है जो दरवाजे की भव्यता को बढ़ाने का काम करती थीं। मेहराबों पर कलश का प्रयोग भी किया गया था जो कि स्पष्ट रूप से हिन्दू स्थापत्य का एक भाग था। स्मिथ ने बुलन्द दरवाजे से अत्यधिक प्रभावित होते हुए इसे भारत का श्रेष्ठ स्थापत्य कार्य माना है।[19]

---

[12] मध्यकालीन भारतरू सल्तनत से मुगलों तक;भाग.2द्धए सतीश चंद्रए पृण्447 ।

[13] ए हैंडबुक टू आगरा एंड द ताजए सिकन्दराए फतेहपुर सीकरी एंड द नेबरहुडए ईण्बीण्हैवेलए पृण 127 ।

[14] ए गाइड टू फतेहपुर सीकरीए मोण अशरफ हुसैनए संपाण एच एल श्रीवास्तवए पृण्54 ।

[15] मध्यकालीन भारत ;खण्ड 2द्धए संपाण हरिश्चंद्र वर्माए पृण्500 ।

[16] हिस्ट्री ऑफ इंडियन एंड ईस्टर्न आर्किटेक्चरए जेम्स फर्ग्युसनए पृण्527 ।

[17] इंडियन आर्किटेक्चर;इस्लामिक पीरियडद्धए पर्सी ब्राउनए पृण 104 ।

[18] आर्किटेक्चर ऑफ मुग़ल इंडियाए कैथरीन बी अशरए पृण्52 ।

[19] हिस्ट्री ऑफ फाइन आर्ट इन इंडिया एंड सीलोनए विन्सेंट स्मिथए पृण्410 ।

● **शेख़ सलीम चिश्ती का मक़बरारू** जामा मस्जिद के अहाते के उत्तरी भाग में एक सफेद संगमरमर की आयताकार इमारत दिखाई पड़ती है जो कि शेख सलीम चिश्ती का मकबरा था। मूलतः इसे लाल बलुआ पत्थर से बनाया गया था किंतु बाद में इसमें संगमरमर लगा दिया गया।[20] एककक्षीय इस भवन को चारों तरफ से एक गलियारे से घेरा गया था और इसका प्रवेश द्वार दक्षिण में था। इस के दक्षिणी भाग में स्थित पोर्च या बरामदा हिंदू मंदिर स्थापत्य कला के अर्द्ध.मण्डप जैसा प्रतीत होता था। इस भवन के ऊपर एक सुंदर गुंबद भी बनाया गया था। इसकी दीवारों पर जालियों का बेहद खूबसूरत काम किया गया है जो कि इसे बहुत ही भव्य बना देता था। इसके चारों तरफ छत से बाहर लटके हुए छज्जे थे जिनको सुंदर स्तंभों के सहारे टिकाया गया था। इस इमारत को गुजरात के कारीगरों ने बनाया था जिन्हें कुतुबुद्दीन खान गुजरात से लेकर आया था। मक़बरे की विशेषताएं शेख़ अहमद खट्टू के मक़बरे से मिलती जुलती प्रतीत होती हैं।[21]

● **एस्ट्रोलॉजर्स सीटरू** इस इमारत को शनिशातगाह.ए.रमालश कहा जाता था।[22] यह स्तम्भयुक्त एक छोटा मंडप था जिसकी छत गुंबदनुमा थी। इसके स्तंभ भी अन्य इमारतों के खम्भों की भांति ही नीचे से चौकोर एवं ऊपर की ओर अष्टभुजीय हो जाते थे। ऊपर की अष्टभुजीय आकृति को फूल पत्तियों के चित्रों के माध्यम से अलंकृत किया गया था। स्तंभों के ऊपर साधारण तोड़ों का प्रयोग दिखाई पड़ता है जो कि शहतीरों एवं लटके हुए छज्जे को सहारा देने का काम करते थे। इस इमारत में 11वीं.12वीं शताब्दी की जैन स्थापत्य कला का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।[23]

हरम सेरा. यह शाही हरम से सम्बंधित इमारतों का समूह था जिसमें जोधाबाई का महलए मरियम की कोठी तथा बीरबल की कोठी इत्यादि शामिल थे।[24] इस संपूर्ण परिसर को अलग करने के लिए चहारदीवारी का निर्माण किया गया था।

● **जोधाबाई का महलरू** इस आयताकार भवन की लंबाई 320 फीटए चौड़ाई 215 फीट तथा ऊंचाई 32 फीट है। इस इमारत का निर्माण पारंपरिक भारतीय शैली में किया गया था। इसमें आंगन के चारों ओर कक्षों का निर्माण किया गया था तथा इन कक्षों को ऋतुओं के अनुसार ठंडा या गर्म किए जा सकने की व्यवस्था भी की गई थी। यह एक दोमंजिली इमारत थी जिसमें ऊपरी मंजिल पर झरोखों का निर्माण भी किया गया था। अंदरूनी सजावट के लिए इसमें घंटियों एवं जंजीरों का प्रयोग दिखाई पड़ता है जो कि हिंदू स्थापत्य का प्रमुख तत्व थाए साथ ही स्तंभों के आधार एवं शीर्ष भी बिल्कुल हिंदू मंदिरों के स्तंभों की तरह ही बनाए गए थे।[25]

● **मरियम की कोठीरू** इसे सुनहरा मकान भी कहा जाता है क्योंकि इस की सजावट में सोने का प्रयोग किया गया था।[26] इसके स्तंभों पर वनस्पतियों की आकृतियां बनाई गई थी तथा बरामदे की दीवार को फ्रेस्को विधि से सुसज्जित किया गया था। बाहरी दीवार पर हमें शिकार के कुछ दृश्य भी दिखाई पड़ते हैंए जबकि स्तंभों पर हाथियों के दंगल का चित्रण किया गया था। इस इमारत में निजता का विशेष ध्यान रखा गया था।

---

[20] मध्यकालीन भारत ;खण्ड 2द्धए संपाण हरिश्चंद्र वर्माए पृण्500 ।

[21] आर्किटेक्चर ऑफ मुग़ल इंडियाए कैथरीन बी अशरए पृण्56 ।

[22] ए गाइड टू फतेहपुर सीकरीए मोण अशरफ हुसैनए संपाण एच एल श्रीवास्तवए पृण्18 ।

[23] उपरोक्त।

[24] मध्यकालीन भारतरू सल्तनत से मुगलों तक;भाग.2द्धए सतीश चंद्रए पृण्446 ।

[25] उपरोक्त।

[26] ए गाइड टू फतेहपुर सीकरीए मोण अशरफ हुसैनए संपाण एच एल श्रीवास्तवए पृण्32 ।

● **बीरबल की कोठीरू** इसे महल.ए.इलाही के नाम से जाना जाता था। यह लाल बलुआ पत्थर से बनी एक दोमंजिला इमारत थी। इसमें निचली मंजिल पर चार कमरे थे जिनमें से प्रत्येक 16 वर्ग फीट का था।[27] दूसरी मंजिल पर जाने के लिए दो सीढ़ियों का निर्माण किया गया था और यहां भी दो कमरे बनाए गए थेए जिनकी छत चपटे गुंबद की बनी हुई थी। गुंबद के सिर पर अवांग मुखी कमल अलंकृत किया गया था।इस इमारत की सजावट के लिए फूल पत्तियों एवं ज्यामितीय अलंकरणों का भरपूर प्रयोग किया गया। इमारत की उल्लेखनीय विशेषताएं क्षैतिज ढलान वाले सनशेड या छज्जे और ब्रैकेट हैं जो उनको सहारा देने का काम करते थे।

उपरोक्त इमारतों के अलावा भी सीकरी में अनेक भवन बनाये गये थे जिनमें से पच्चीसी अदालतए इबादतखानाए अनूप तालाबए आँख मिचौलीए तुर्की सुल्ताना की कोठीए खास महलए हवा महलए रंग महलए हिरन मीनार एवं हम्माम इत्यादि के नाम उल्लेखनीय हैं।

वर्ष 1850 में अंग्रेजों द्वारा इसे एक तहसील बना दिया गया। जिन महलों में कभी आम आदमी प्रवेश तक नहीं कर सकता था अब वहां पर सरकारी कार्यालय और अधिकारियों के आवास थेए इसकी वजह से इन इमारतों को काफी नुकसान भी पहुंचा। अट्ठारह सौ सत्तावन की महान क्रांति के समय फतेहपुर सीकरी में भी दो या तीन संघर्ष अंग्रेजों और क्रांतिकारियों के मध्य हुए।[28] भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की स्थापना के उपरांत वर्ष 1905 में यहां की सभी इमारतें उसे सौंप दी गई।

फतेहपुर सीकरी के अंदर पानी की प्रचुरता बनाए रखने के लिए विशेष इंतजाम किए गए थे। यहां 14 बाओलियाँ एवं 16 कुएं निर्मित किए गए थेए इसके अलावा 7 हौज भी बनवाए गए थे जिनमें हमेशा पानी भरा रहता था। अबुल फजल यह उल्लेख करता है कि बरसात का पानी जिस हौज में संरक्षित किया जाता था बादशाह के लिए उस पानी में गंगा जल मिलाकर भोजन तैयार किया जाता था। इसके अलावा सीकरी के पास उपस्थित झील में भी पर्याप्त पानी रहता थाए जिसका उल्लेख बाबर ने भी अपनी आत्मकथा में किया था।

इन सभी विशेषताओं के बावजूद फतेहपुर सीकरी को कुछ ही वर्षों में छोड़ दिया गया तथा अकबर अपनी राजधानी लाहौर लेकर चला गया। इसके पीछे कई लोग जल समस्या को जिम्मेदार मानते हैं किंतु यह कारण उतना प्रभावी नहीं लगता क्योंकि एक दशक तक यहीं से अकबर ने पूरे साम्राज्य का शासन चलाया था। इस राजधानी परिवर्तन का प्रमुख कारण सामरिक व राजनीतिक ही माना जाता है क्योंकि अकबर उत्तर पश्चिम क्षेत्र में फैल रही अस्थिरता को रोकना चाह रहा थाए विशेष रूप से मिर्ज़ा हाक़िम को। इस दृष्टि से लाहौर अधिक उपयुक्त अवस्थिति में था।

फतेहपुर सीकरी भले ही केवल कुछ वर्षों के लिये मुग़ल ताज के शीर्षतम स्थल के रूप में एक क्षणिक नक्षत्र बनकर रहा होए किन्तु इसमें कोई संदेह नहीं किया सकता कि इसकी आभा और भव्यता दीर्घकालिक एवं ध्रुवतारे के समान विद्यमान रही और आज तक हमें मुग़ल स्थापत्य की सबसे विस्तृत एवं सुनियोजित शाही शहरी योजना का परिचय करवा रही है। यह नगरी न केवल स्थापत्य की दृष्टि से श्रेष्ठ है अपितु अपनी वैविध्यपूर्ण शैलियों के जरिये अक़बर के समावेशी विचारों वाली सुलहकुल नीति का भी जीवंत रूप से प्रमाण उपलब्ध करवाती है।

[27] उपरोक्तए पृ॰43 ।

[28] उपरोक्तए पृ॰11 ।